ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No. :UPBIL04292,
RNI REG. No.: UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No.: 561/2013-14 Vol.-5, No.-II, PP-232-235,YEAR- DEC.2016

भारतीय कला समीक्षावाद क्या आधुनिक कला है?

❑ डॉ0 अमृत लाल

"समीक्षावाद भारत में आधुनिक कला का प्रथम स्वदेशी आन्दोलन है। यह पाश्यात्य आधुनिक कला आन्दोलनों से अपनी भिन्न पहचान रखता है। यह न तो पाश्चात्य आधुनिक कला से प्रभावित है न ही उससे कोई प्रेरणा ग्रहण करता है। इसकी मूल प्रेरणा अपने देश की वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, वैचारिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियाँ है। इसका प्रमुख प्रयास है भारतीय आधुनिक कला को पश्चिमी आधुनिक कला की परिपाटी से मोड़कर मौलिक पथ पर अग्रसर करना। कला को व्यक्तिवादी सीमा से निकाल कर समाजोन्मुख बनाना रहस्यवादी जामे से निकाल कर उद्देश्यपूर्ण बनाना। अतः समीक्षावाद भारत की नई मौलिक आधुकि कला है।"

भारतीय कला समीक्षावाद क्या आधुनिक कला है– आधुनिकता की एक बहुत बड़ी शर्त मौलिकता है किन्तु मौलिकता किसी भी विचार या कार्य क्षेत्र में उत्ष्टता की शर्त नहीं है। विचार अथवा कार्य अपने पूर्व के विचारों तथा कार्यों से भिन्न हो सकता है, किन्तु यह जरूरी नहीं है कि वह उपयोगी हो, महत्वपूर्ण हो अथवा उत्ष्ट हो। इसलिए वह मौलिकता जो उपयोगी, महत्वपूर्ण अथवा उत्ष्ट नहीं, उसे बात का बंतगढ़, ऊल–जलूल अथवा तमाशा ही मानना चाहिए और ऐसे तमाशे पाश्चात्य आधुनिकता के क्षेत्र में रोज देखने को मिलते रहे है। कला तमाशा, बाजीगिरी, हाथ की सफाई नहीं है? यह सब मात्र क्षणिक मनोरंजन के साधन होते है, कला के अनुभूति जनक तथा सवेदनात्मक स्तर तक नहीं पहुंच पाते। क्रान्तिकारी कदम है भारतीय चित्र कला के क्षेत्र में। अब तक जहाँ भारतीय आधुनिक कहलाने वाले कलाकार मात्र पश्चिमी कला शैलियों के पद चिन्हों पर चलकर भारतीय कला को आधुनिकता प्रदान करने का निरर्थक प्रयास कर रहे थे। वही समीक्षावादी कलाकारों ने भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल एक ऐसे आधुनिक कला आन्दोलन का सूत्रपात किया है जो वर्तमान भारतीय जन जीवन को प्रभावित तथा जागरूक में पूरी तरह समर्थ है और भारतीय कलाकारों ने एक मौलिक प्रगति का द्वार खोलता है।

तूलिकांकन, फरवरी–मार्च १९७९, वाराणसी– आधुनिकता का अर्थ समकालीनता से भी लिया जाता है, किन्तु हर एक कार्य या विचार जो वर्तमान में हो रहा है, जरूरी नहीं कि आधुनिक हो। आज भी अनेक स्थानों पर आदिवासी जातियां पाई जाती है किन्तु उनका कार्य तथा विचार परम्परागत ही होता है, आधुनिक नहीं। आधुनिकता की दूसरी शर्त है कि कार्य तथा विचार परम्परागत न हो और जिस व्यक्ति अथवा समाज में परम्परागत ढंग से कार्य तथा विचार किये जाते है, उसे आधुनिक नहीं माना जा सकता। जो व्यक्ति अथवा समाज अपनी सोझ–समझ, स्वोज अथवा अनुभूति के आधार पर अपनी परम्पराओं की सीमा को लांघ जाता है वहीं आधुनिक होता है किन्तु कोई भी सरफिरा या मूर्ख भी अक्सर अपनी परम्परा की सीमा लांघ जाता है। उसे आधुनिक नहीं, सरफिरा, सनकी या पागल ही जाना जाएगा क्योकि उसके क्रिया–कलाप अथवा विचार समाज के हित में नहीं उसे जीवन में अथवा समाज में कोई महत्व प्राप्त नहीं हो सकता। मौलिकता विचारों अथवा कार्य का वह पक्षा है जो उसे समाज के लिए हितकारी बनाता है। वर्तमान समाज के लिए कौन सा कार्य या विचार कितना अधिक हितकारी है यही मौलिकता की पहिचान है और इसीलिए मौलिकता आधुनिकता के लिए एक शर्त है।

परम्परा आधुनिकता विरोधी स्वर नहीं है बल्कि एक दूसरे के पूरक है। आधुनिकता परम्परा

❑ एसोसिएट प्रोफेसर– ललित कला विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ (उ0प्र0), भारत

की अगली कड़ी होती है, परम्परा को नया अर्थ देते हैं, आगे बढ़ाती है। परम्परा और आधुनिकता पूर्व अर्जित पूंजी तथा वर्तमान की नई कलाई के रूप में होते है और दोनों एकत्र होकर कोष को बढ़ाते है।

समीक्षावादी चित्रकार लोक कला की भाषा से मुख्य प्रेरणा ग्रहण करते है, मगर समीक्षावाद लोक–कला नहीं है, भारत की नई मौलिक आधुनिक कला है। लोक चित्रकला अधिकांशः सज्जात्मक होती है, भावोत्तेजक कम। किन्तु जहाँ भावोत्तेजक होती है, वहाँ बड़ी पैनी चुटीली तथा संवेगात्मक होती है, बड़ी दूर तक सीधा मार करती है। इस रूप में वह बड़ी आधुनिक दिखती है, समीक्षावाद सज्जा में आस्था नहीं रखता किन्तु सवेगात्मकता में लोक कला से अवश्य प्रेरणा ग्रहण करता है। जो भाषा संवेग प्रधान होती है। वह व्याकरण, चित्रेचित गुणों, कला के मान्य, सिद्धान्तों की लीक पर नहीं चलती। उसकी मुक्तता ही उसकी शक्ति बन जाती है। समीक्षावाद भी ऐसी ही मुक्त भाषा तथा अभिव्यंजना में आस्था रखता है और ऐसा होने पर मान्य चित्रोचित्र गुणों के वे पार निकल जाते है जतदेबवदक करते है। पश्चिम के आधुनिक कलाकार हेनरी रूसो, वानगाग, गोगा, मोदिग्लियानी, रूसो की चित्र भाषा में कुछ वैसी ही थी और उनमें भी कला के ठेकेदारों ने चित्रेचित्र गुणों की कमी पाई थी, यद्यपि वे संसार भर में मान्य हुए है।

समीक्षावाद भारत में आधुनिक कला का प्रथम स्वदेशी आन्दोलन है। यह पाश्चात्य आधुनिक कला आन्दोलनों से अपनी भिन्न पहिचान रखता है यह न तो पाश्चात्य आधुनिक कला से प्रभावित है न ही उससे कोई प्रेरणा ग्रहण करता है। इसकी मूल प्रेरणा अपने देश की वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, वैचारिक तथा सांस्तिक परिस्थितियाँ है। इसका प्रमुख प्रयास है भारतीय आधुनिक कला को पश्चिमी आधुनिक कला की परिपाटी से मोड़ कर मौलिक पथ पर अग्रसर करना। कला को व्यक्तिवादी सीमा से निकाल कर समाजोन्मुख बनाना रहस्यवादी जामे से निकाल कर उद्देश्यपूरक बनाना।

अनावश्यक जटिलताओं से मुक्त कर एक सरल स्पष्ट तथा प्रभावशाली भाषा का रूप देना। कला को वर्ग विशेष के अधिपत्य से मुक्त कर सर्वसाधारण के लिए सुलभ कराना। कला की प्रदर्शनियों को बड़े–बड़े नगरों की सीमा से बाहर निकाल कर छोटे नगरों, कस्बों, ग्रामो, मजदूर बस्तियों तक ले जाना और उसके उद्‌बोधन का साधन बनाना। इस आन्दोलन का कोई राजनैतिक उद्देश्य नहीं है, बल्कि कला को सामाजिक जीवन का एक प्रमुख तथा प्रभावशाली अंग बनाना है। यह आन्दोलन इसलिए है कि यह एक सामूहिक प्रयास है, कला को एक नई दिशा देने का।

इस कला की कोई विशेष शैली तक स्थिति नहीं रखा जा सकता। शैली को कार्य विधि की विशेषता तक सीमित रहती है, पर समीक्षावादी काला मात्र एक शैली विशेष नहीं है, कला के क्षेत्र में एक नई विचारधारा नये उद्देश्य, नये पथ का निर्माण करती है। शैली अधिकांशतः व्यक्तिगत होती है। आन्दोलन विचार धारा तथा लक्ष्य को लेकर एक सामूहिक प्रयास होता है। समीक्षावाद कलाकारों के लिए एक नया पथ प्रदर्शित करता है। वैसे जब कई कलाकार किसी विशेष आन्दोलन से प्रभावित होकर चलते है तो उनकी कार्य विधि शैली में भी काफी कुछ सम्यता होती है। इस दृष्टि से समीक्षावादी कलाकारा की शैलियों में भी कुछ हद तक एकता दृष्टि गोचर होती है। जैसे सरल, स्पष्ट, पैनी कलात्मक भाषा प्रतीकात्मकता तथा व्यंगात्मकता, सामाजिक चेतना, विषय वस्तु प्रधानता आदि। इसके अतिरिक्त अन्य बातो में समीक्षावादी कलाकारों की शैलियों में कुछ भिन्नतायें भी .ष्टिगोचर हो सकती है। तकनीकी प्रयोग में अन्तर पाया जा सकता है। फिर भी सभी कलाकारों का प्रयास यदि रहता है कि वे किसी देशी–विदेशी अथवा व्यक्तिगत, कलाकारों की शैली अथवा तकनीक न अपनाये।

समीक्षावादी कलाकार के लिए आन्दोलन की प्रमुख शर्तों से प्रसिद्ध होना आवश्यक है, किन्तु उन्हें इसकी पूर्ण स्वतंत्रता है कि अपनी कलात्मक भाषा को बोधगम्य सरल स्पष्ट तथा प्रभावोत्तेजक बनाने के लिए प्रयोगों के आधार पर शैली तथा

तकनीक को भी विकसित करें। इसके लिए आवश्यक होने पर वे अन्य कालो, देशो में किये गये प्रयासों से भी प्रेरणा ले सकते है। पाश्चात्य आधुनिक कला भी तकनीकी दृष्टिकोण ये यदि हमारे लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हो सकती है तो समीक्षावादी उसका भी प्रयोग कर सकते है। हमारा समीक्षावादी कला आन्दोलन का रास्ता इतना बंधा बंधाया तथा संकरा नहीं है कि हम आँख मूंद कर किसी चीज का विरोध करें। फिर कलाकार को इतना स्वतंत्र तो होना ही चाहिए कि यह बात का अपनी क्षमता के अनुरूप शक्तिशाली ढंग से व्यक्त कर सके। ऐसा करने के मौलिकता ही अपेक्षित है न कि किसी दूसरे की शैली अथवा तकनीक की नकल। समीक्षावादी कलाकार के लिये न तो शैली लक्ष्य है, न तकनीक लक्ष्य है सरल, स्पष्ट, तीव, प्रभावोत्पादक, स्माजोन्मुरव अभिव्यंजना और एक सशक्त आधुनिक कला भारत की समाजवादी कला है।

प्रो० राम चन्द्र शुक्ल के अनुसार "समीक्षावाद भारतीय आधुनिक कला का एक सशक्त आन्दोलन है जिसको भारतीय आधुनिक कला को पाश्चात्य आधुनिक कला के प्रभाव से मुक्त कर एक मौलिक भारतीय स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया है। कला को समाज की वर्तमान समस्याओं से जोड़कर, सरल स्पष्ट, कलात्मक भाषा में व्यंग्यात्मक एवं प्रतीकात्मक स्वरूप प्रदान कर सर्वग्राहय बनाया है।"

समीक्षावाद के प्रति पत्र–पत्रिकाओं के नजर से– धर्मयुग सप्ताहिक, १८ मार्च १९७९ बम्बई आधुनिक कला वही हो सकती है जो वर्तमान जीवन समाज विचारधारा तथा सम्सयाओं से जुड़ी हुई हो। पिछले दशकों में तमाम भारतीय कलाकारों ने आधुनिकता से जुड़ने का प्रयास किया, लेकिन वे पाश्चात्य कला को ही आधुनिकता का आदर्श मान अमूर्तवादी घनवादी और अति यर्थाथवादी कला .तियों का सृजन करते रहे। इन पाशाचत्य मापदण्डों पर आधारित उनकी . तियों का उपयोग किसी कमरे में टंगी सजावट की सामग्री से अधिक नहीं हो सका। पश्चिमी कला के इस अन्धानुकरण का विरोध करते हुये पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के कुछ चित्रकारों ने "समीक्षावाद" नाम से एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन दिल्ली की आल इण्डिया आर्ट्स ऐंड क्राट सोसाइटी की गैलरी में किया इस प्रदर्शनी का महत्व इसलिये भी है कि प्रदर्शनी में शामिल चित्रकारों ने पाश्चात्य नकल पर आधारित भारतीय कला को पूरी तरह नकार कर "समीक्षावाद" नाम से मौलिक चिंतन पर आधारित भारतीय कला के नये आन्दोलना की घोषणा की।

कादम्बिनी, मासिक, अप्रैल १९७९ दिल्ली

भारत में पिछले तीस पैतीस वर्षों में आधुनिक कला के नाम से बहुत सारी कला कृतियाँ बनी है। प्रदर्शित भी हुई है, और प्रचलित भी हुई है किन्तु भारतीय कला के क्षेत्र मे मौलिक सूझ बूझ विचार धारा अथवा स्वरूप वाला कोई भी मौलिक कला आन्दोलन उभर कर सामने नही आ सका जबकि पश्चिमी देशों में लगातार मौलिक कला आन्दोलनों के नित नये स्वरुप उभरते रहे है और आज भी उभर रहे है। इस दृष्टि से समीक्षा वाद भारतीय आधुनिक कला के क्षेत्र में प्रथम आन्दोलन है जो भारतीय आधुनिक कला को मौलिक स्वरूप तथा दिशा प्रदान करने के लिये कृत संकल्प है।

देश में भारतीय चित्रकला के नाम पर मात्र पाश्चात्य आधुनिक कला की विविध शैलियों के भारतीय संस्करण देखने को मिल रहे है। एक ऐसी कला उपस्थित हुई जो न तो देश वासियों का हित साधन कर पा रही है और न विदेशो में ही उसे कोई सम्मान प्राप्त हो सका है। ऐसे दुरूह किस्म के चित्र बन रहे जो न तो कलाकारों के पल्ले पड़ते है। न दर्शको के मात्र झूठे अखबारी प्रचार के बल पर उसे जिलाये रखने का प्रयास चल रहा है। साधारण जन से तो उसका दूर का भी ताल्लुक नही, प्रबुद्ध वर्ग भी उससे जुड़ नही पाता। इस प्रकार मात्र पश्चिम की नकल करने के अलावा हमारे कलाकारों के पास अपना रास्ता ही नही। सम्पूर्ण भारतीय कलाकार वर्ग एक ऐसी अन्धी गली में पहुंच गया है जहाँ से आगे का रास्ता ही नहीं सूझता इसी परिस्थिति से उबकर उत्तर प्रदेश के एक प्रबुद्ध तथा जागरुक कला वर्ग ने समीक्षावाद के नाम से एक भारतीय कला शैली का

आन्दोलन आरम्भ किया है। समीक्षावाद ने खुलकर पाशाचत्य आधुनिक कला के अतिशय प्रभाव के खिलाफ आवाज उठाई और भारत में देशी आधुनिक कला शैली का श्री गणेश किया है। यह आन्दोलन भारत में ऐसी भारतीय आधुनिक कला का प्रचार प्रसार करना चाहता है जो पश्चिमी व्यक्तिवादी आधुनिक कला से दूर हटकर जनहित में जनता की आशा आकाक्षा की प्रतिनिधित्व करते हुये अपनी मिट्टी की गन्ध के साथ एक सीधी सरल तथा स्पष्ट शैली में नई कला का निर्माण करना चाहता है। यह कला शुद्ध देशी होगी और आज के समकालीन भारत की प्रमुख सामाजिक समस्याओं पर अपनी समीक्षा प्रस्तुत करेगी, जन जन को प्रबुद्ध करेगी तथा उनके हित में कार्य करेगी। इसक लक्ष्य व्यक्तिवादी कला की भाति लोगो का मतिभ्रम करना न होगा बल्कि वास्तविक प्रश्नो तथा समस्याओं से परिचित कराना होगा। उनमें नई चेतना का संचार करना होगा।

—डॉ० गोपाल मधुकर चतुर्वेदी

श्री जगन सिहं सैनी अध्यक्ष कला भारती कानपुर इस आन्दोलन ने भारत के कला जगत को अत्याधिक प्रभावित किया है। इसी कारया विषय पर देश के प्रमुख समाचार पत्रे एवं पत्रिकाओं में चर्चा हुई है। कुछ कला विद्वानों ने इस विषय पर विचार गोष्ठिया भी आयोजित की है।आपके आन्दोलन का अध्ययन करने के पश्चात् भारतीय कला के पुनरुत्थानवादी आन्दोलन की याद आती है। जिस प्रकार ई०वी० हैवेल, आन्नद कुमार स्वामी, अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने उस आन्दोलन के द्वारा पाश्चात्य कला के अंधानुकरण का विरोध किया था और भारतीय परम्परावादी कला को सही ढंग से पहचानने तथा अपनाने पर बल दिया था, उसी प्रकार आपके निर्देशन में समीक्षावादी कलाकार भी युग की आवश्यता को पहचानते हुये, इस नये कला आन्दोलन का सूत्रपात कर रहे है। इस आन्दोलन के सफल प्रारम्भ पर मै आय सबको बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि आपका उददेश्य सफल होगा।

१६ जुलाई १९८० डॉ० अनीस फारूकी, डेपुटी कीपर, नेशनल गैलरी आफ मार्डन आ नई दिल्ली

"मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई थी कि शुक्ल जी की अध्यक्षता मे हम एक ऐसे लक्ष्य की ओर बढ़ रहे है जो निःसंदेह कला जगत मे अद्धितीय मोड़ कहा जायेगा।

"अमृता शेरगिल के चित्रे के देख लिजिये, तेल माध्यम में कार्य किये जाने के बावजूद चित्र के स्वरूप में एक नई दिशा देखी जा सकती है। यह दिशा सेजा और गोंगा से करीबतर होते हुये भी समीक्षा वाद के बुनियादी मेनो—फेस्टो के बहुत नजदीक है।"

— ५ मई १९८० 'आज', १६ फरवरी १९७९, वाराणसी

समीक्षावादी कला की द्वितीय प्रदर्शनी अपने आप में इसलिये महत्वपूर्ण है क्योंकि पाश्चात्य आधुनिक कला के प्रभावों से ग्रसित भारतीय कला को मौलिक स्वरूप प्रदान करने के लिये समीक्षावाद नाम से भारतीय आधुनिक कला का एक नया आन्दोलन चलाने का पहला प्रयास उत्तर प्रदेश के कलाकारों ने आरम्भ किया। कुल मिलाकर समीक्षावादी चित्रकारों ने बडे जोरदार ढंग से भारतीय कलाकारों को एक चुनौती दी है। कला को जनमानस के नजदीक ले जाने तथा समाज की वर्तमान समस्याओं से जोडने का यह प्रयास निश्चित ही भारतीय कला जगत के लिये एक क्रान्ति का सूचक है।

—डॉ० कमलेशदत्त पाण्डे

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक कला 'समीक्षावाद', लेखक—प्रो० रामचन्द्र शुक्ल, पृ० सं०—८६ से ११७ से साभार।
2. समीक्षावाद (एक कदम और आगे), लेखक—डा० गोपाल मधुकर चतुर्वेदी से साभार।
3. आधुनिक चित्रकला, लेखक— प्रो० रामचन्द्र शुक्ल से साभार।
4. भारतीय चित्रकला (ऐतिहासिक सन्दर्भ), लेखक—डा० गोपाल मधुकर—चतुर्वेदी से साभार।